W.e.f
स्पेन्द

यौन शिक्षा – आवश्यकता एवं महत्व

यौन इच्छाओं एवं उनके प्रति जिज्ञासा होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों में से एक 'काम' भी है, परन्तु बालक और बालिका को रूढ़िवादी समाज में यौन शिक्षा नहीं प्रदान की जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि इसे सामाजिक निषेध की वस्तु मानकर चोरी-छिपे इसके विषय में, अवास्तविक तथा भ्रांतिपूर्ण अपूर्ण जानकारी एकत्र हो जाता है जिससे आगे चलकर उनके शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। A/c to Dr. Larence K. Franck बालक और बालिकाओं की तीन स्थितियों में वर्णन किया गया है —

→ मत करो (The don't stage)
→ करो (The do's stage)
→ क्यों इसलिए (Why because stage)

पहला stage में बच्चा क्रियाशील होता है तो उसे टोका-टाकी जैसी बातें सुनने को मिलता है। यहीं से वह सामाजिक बंधन में बंधने लगता है और यौनांगों के स्पर्श को भी सीखता है। इस प्रकार वे External prohibitions उसके व्यवहार के Inhabitions का रूप धारण कर लेते हैं।

दूसरे stage में मत करो के साथ-साथ करो की स्थिति भी चलती रहती है। 'करो' की स्थिति में स्वीकृत व्यवहार के ढंग जैसे — पहनावा, स्वच्छता, स्वास्थ्य की आदतें, भाषा का प्रयोग, व्यवहार एवं प्रतीकों को सीखना सम्मिलित है।

तीसरे stage में बच्चे सामाजिक नियमों, रीति-रिवाजों, धार्मिक विश्वास, कला-विज्ञान आदि की जानकारी प्राप्त करता है या चाहता है। जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं उनमें जिज्ञासा

तथा अनेक प्रकार के प्रश्न उभरने लगते हैं। जैसे — शारीरिक संरचना, बच्चे का जन्म इत्यादि। यौन शिक्षा के तहत अवस्थाओं में लिंग से जुड़े विषयों की वैज्ञानिकतापूर्ण शिक्षा, शारीरिक संरचना एवं बनावट, शारीरिक संबंध तथा प्रक्रिया आदि के बारे में बताया जाता है। यह शिक्षा बच्चों के लिए इस तरह से मानसिक विकास करते हैं। जैसे —

→ उचित लैंगिक दृष्टिकोण का विकास करना।
→ शारीरिक संरचना एवं बनावट का ज्ञान प्रदान करना।
→ विभिन्न आयु में होने वाले शारीरिक परिवर्तन और प्रक्रिया का ज्ञान प्रदान करना।
→ शारीरिक संबंधों एवं उससे जुड़ी जानकारी वैज्ञानिक रूप से प्रदान करना।
→ यौन जनित रोगों से बचाव की शिक्षा देना।
→ यौन जनित दुर्व्यवहारों की पहचान एवं रोकथाम का ज्ञान देना।
→ बालक और बालिकाओं की भ्रांतियों का निराकरण करना। इत्यादि।

इस प्रकार आज के युग में यौन शिक्षा की आवश्यकता अधिक बढ़ गई है, क्योंकि बच्चों के पास इन विषयों पर जानकारी प्राप्त करने के अनेकानेक साधन हैं, पर वे एकपक्षीय हैं। इससे उनके मन में भ्रांतियाँ और काल्पनिकता प्रभावी हो जाती हैं। जिसके दुष्परिणाम इस तरह हैं —

→ भावनात्मक अस्थिरता।
→ घर वालों तथा समाज के प्रति उपेक्षा।
→ पढ़ाई में मन न लगना।
→ निराशा।

Scanned with CamScanner

③

→ समाज में गलत काम करना।
→ कुंठा।
→ अश्लील साहित्य के प्रति रुचि होना।
→ चिड़चिड़ापन।
→ मानसिक विकार।
→ स्त्रियों के प्रति अनादर।
→ अश्लील हरकतें इत्यादि।

जैसा कि पता चलता है कि यौन-शिक्षा अगर प्रदान नहीं की जाएगी तो युवाओं में परस्पर लिंग के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास नहीं होगा, जिससे विद्यालय, घर और बाहर कहीं भी सुरक्षात्मक वातावरण का सृजन नहीं हो सकेगा। अतः इसे प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित प्रकार से जागरूकता लाई जा सकती है :—

① यौन शिक्षा और यौन से संबंधित विषयों के प्रति शर्म नहीं होना चाहिए बल्कि जागरूकता का भाव रखना चाहिए।

② यौन इच्छाओं तथा क्रियाओं की विकास की प्रक्रिया जानना।

③ विद्यालय तथा समाज प्रजातांत्रिक मूल्यों में आस्था रखना।

④ विद्यालयी क्रियाकलापों में सामूहिकता पर बल।

⑤ सह-शिक्षा को प्रोत्साहन।

⑤ घर में समानता का व्यवहार होना।

⑥ स्नेह-संबंध का महत्व बताना।

⑦ समाज को सुरक्षित बनाकर।

Scanned with CamScanner

8. बालक और बालिकाओं के बीच स्वास्थ्यप्रद लैंगिक झुकाव बनाना।

9. निर्देशन एवं परामर्श की सुविधा।

10. समुचित पाठ्यक्रम द्वारा।

11. प्रौढ़ शिक्षा के प्रसार द्वारा।

12. बालिकाओं के विद्यालयीकरण को प्रोत्साहित करके।

13. अश्लील गानों, पत्रिकाओं इत्यादि पर रोक लगाकर।

14. अश्लील कृत्य करने वालों को कानून के हवाले करना।

15. लैंगिक समानता हेतु बनाए गए कानूनों का पालन करना।

16. अन्धविश्वास तथा रूढ़ियों की समाप्ति द्वारा।

17. व्यावसायिक शिक्षा द्वारा।

18. माता-पिता द्वारा इन विषयों पर संवाद स्थापित करना।

19. अन्य अभिकरणों से संबंध स्थापित करना। इत्यादि।